The Importance of Truth

(सच का महत्व)

प्रस्तावना

सच बोलना एक बडा नैतिक गुण है। सच को साबित करने के लिए अक्सर बच्चे और बडे भी माता पिता की कसम तक खा लेते हैं क्योंकि सामने वाले को विश्वास ही नहीं होता है कि कोई सच बोल रहा है। पर ये स्थिति बदल सकती है अगर लोगों को ये भरोसा हो जाय कि सामने वाला व्यक्ति तो हमेशा सच बोलता है। उसके झूठ बोलने का तो सवाल ही नहीं उठता. क्या ऐसी स्थिति हमारे साथ है?

मैं किसी से हाथ उठाने के लिए नहीं कहूंगा लेकिन इतना जरूर है कि सच बोलना बहुत तो नहीं पर थोडा कठिन काम है। फिर भी सच बोलने से हमारी अनेक समस्याएं दूर हो जाती हैं। हमें लोगों से नए नए झूठ नहीं बोलने पडते और एक झूठ को छिपाने के लिए दूसरा और फिर तीसरा झूठ नहीं बोलना पडता। सच्चाई का साथ लेकर चलने वाले की सारी दुनिया कद्र करती है। और ऐसे लोगों को हमेशा दुनिया ने नमन किया है। तो क्या आप भी तैयार हैं सच का सामना करने के लिए। या फिर कसमें खाकर सच को साबित करते रहने का सिलसिला जारी रखना है।

प्रश्न

१. आपको कभी सत्य बोलने पर खराब अनुभव हुआ है?
२. आप की दृष्टि में सत्य क्या है?
३. सत्य के साथ जीवन की प्रगति कैसे संभव है?
४. सत्य अगर विरुद्ध जाता हो तो भी क्या सत्य बोलना चाहिए?
५. क्या हमें सच बोलने की आदत को अपनाना चाहिए?
६. हमें सच क्यों बोलना चाहिए?

१. गोपाल की सत्यवादिता

उस दिन आचार्य जी ने श्याम पट पर गणित के कुछ प्रश्न लिख दिये और अगले दिन उन सबका समाधान करके लाने के लिए बच्चों से कहा। बच्चों ने घर जाकर किसी-न-किसी की सहायता लेकर सारे प्रश्नों का समाधान किया, परन्तु गोपाल सारे प्रश्नोव का समाधान किसी की सहायता लिए बिना खुद करने लगा। सारे प्रश्नों का समाधान उसने लिखा, केवल एक प्रश्न का समाधान करने लिए उको एक मित्र की सहायता लेनी पड़ी।

अगले दिन आचार्य जी ने सब बच्चों की कापी देखी और सब में कुछ-न-कुछ त्रुटि को रेखांकित किया, किन्तु गोपाल ने सभी प्रश्नों का उत्तर ठीक लिखा था। आचार्य ने गोपाल को पास बुलाकर उसकी बहुत प्रशंसा की एवं पुरस्कार स्वरूप जब अपनी कलम उनको देनी चाही तो गोपाल पुरस्कार लेने के बदले जोर से रोने लगे। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तब गोपाल ने कहा- मैं पुरस्कार के योग्य नहीं हूं। मैंने एक प्रश्न का समाधान एक मित्र की सहायता से किया है। मैंने अपने आपको धोखा दिया है, मैं तो दण्ड के योग्य हूं।

गोपाल की सत्यवादिता देखकर आचार्य जी पहले से ज्यादा खुश होकर बोले- अभी मैं तुम्हारी सत्यवादिता के लिए यह पुरस्कार दे रहा हूं, उसे स्वीकार करो। बड़ा होकर वे गोपाल कृष्ण गोखले जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। गांधी जी उनको अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।

२. सच्ची शिक्षा

कौरव और पांडवों का गुरु द्रोणाचार्य के यहां विद्याध्ययन प्रारंभ हुआ। आश्रम में उनका वह पहला ही दिन था। ब्राह्म्यमुहूर्त में उठकर सारे विद्यार्थी आश्रम के विशाल आम्र वृक्ष के नीचे अनुशासित हो एकत्र बैठे थे। आचार्य ने प्रार्थनोपरान्त पहला पाठ सिखाया। ``सत्यं वद धर्मंचर" अर्थात सदा सत्य बोलो और धर्म का सदा आचरण करो इस आशय का वह पाठ था। आचार्यजी ने पूर्ण विस्तार से इन पंक्तियों का अर्थ सबको समझाया और अंत में इन दोनों पंक्तियों को कण्ठस्थ करने की सूचना दी।

सभी को ये दोनों पंक्तियां त्वरित कण्ठस्थ हो गयीं। दूसरे दिन आचार्यजी ने सभी से दोनों पंक्तियां कण्ठस्थ हुई या नहीं यह पूछा। सभी ने हाथ ऊपर उठाये केवल युधिष्ठर सिर झुकाये बैठा था उसने हाथ ऊपर नहीं किया।

आचार्य ने युधिष्ठिर से पूछा- ``युधिष्ठिर तुमने कण्ठस्थ क्यों नहीं किया?"
इस पर युधिष्ठिर ने विनयपूर्वक कहा- ``मैं कल प्रयास करूंगा।"

दूसरे दिन आचार्य ने वही बात युधिष्ठिर से पूछी। दूसरे दिन भी युधिष्ठिर ने नकारात्मक उत्तर दिया। इस प्रकार तीन-चार दिन बीते। आचार्य क्रोधित हुए। उन्होंने युधिष्ठिर को पाठ कण्ठस्थ न होने का कारण पूछा। युधिष्ठिर ने कहा- ``केवल कण्ठस्थ करना तो सरल है, परन्तु पढ़ाया हुआ पाठ जीवन में कार्यान्वित करना भी आवश्यक है।

अन्यथा उस कण्ठस्थीकरण का क्या उपयोग? मैं गत चार दिनों से सत्य बोलने का प्रयास कर रहा हूं परन्तु दिनभर में एकाध बार अनजाने में झूठ बोला जाता है। जब तक मुझे झूठ न बोलने का पूर्ण अभ्यास नहीं होता तब तक आपने सिखाया हुआ पाठ मुझे अंगीकृत कैसे होगा? और आचरण में न लाते हुए पाठ कण्ठस्थ हो गया है ऐसा कहना तो प्रत्यक्ष अपने से ही झूठ बोलना होगा। इसलिए मैं गत चार दिनों से कहता आया हूं कि मुझे आपने बताया पाठ कण्ठस्थ नहीं हुआ है। "

युधिष्ठिर का उत्तर सुनकर द्रोणाचार्य और सारे विद्यार्थी आश्चर्यचकित हो गये। आचार्यजी ने युधिष्ठिर को सबके सामने बुलाकर पीठ थपथपाकर उसकी सराहना की और बोले- ``इतनी छोटी आयु में तुम्हारी सत्यनिष्ठा देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हो गया हूं। मैंने पढ़ाया हुआ पाठ तुमने केवल कण्ठस्थ ही नहीं अपितु उसे जीवन में उतारा है, यह बड़े गर्व की बात है। तुम्हारी सत्यनिष्ठा और धर्माचरण देखकर संसार तुम्हे धर्मराज कहेगा?" युधिष्ठिर ने विनम्रतापूर्वक द्रोणाचार्य को प्रणाम किया।

सुविचार

- यदि आप सच बोलते हैं तो आपको कुछ याद रखने की ज़रुरत नहीं रहती। **- मार्क ट्वैन**
- सत्य किसी व्यक्ति विशेष की संपत्ति नहीं है बल्कि ये सभी व्यक्तियों का खजाना है। **- राल्फ वाल्डो एमर्सन**
- शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान और सत्य का प्रचार प्रसार है। **- जॉन ऍफ़. केनेडी**

संकल्प

सच ही जीवन का आधार है और आज से हम सच को ही जीवन में अपनाएंगे।